# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१


## सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

## ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ जून - 2022

९

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

**प्रश्न-१ रिक्त स्थान**

(१) बंध
(२) अनंत चारित्र
(३) देव-गुरु
(४) वज्रऋषभ नाराच सं.
(५) त्रसकाय में
(६) नवकार
(७) कल्प वृक्ष
(८) सम्यग् दर्शन
(९) सुवर्ण
(१०) भावबन्ध
(११) शरद पूनम
(१२) धान्य
(१३) धर्मघोष सूरि
(१४) पंचेन्द्रिय
(१५) स्वाश्रयी
(१६) भौतिक
(१७) परिणाम
(१८) पुण्योदय
(१९) मनुष्य जीवन
(२०) साकार

**प्रश्न-२ एक ही शब्द में**

(१) अगुरु लघु
(२) अभिजीत
(३) पूर्वाभिमुख
(४) जुआरी
(५) मनपर्यव ज्ञान
(६) राजकुमार
(७) श्याय
(८) यशस्वान
(९) गुरु
(१०) स्थावर
(११) जीतशत्रु
(१२) अभयदान
(१३) कछुआ
(१४) महावीर स्वामी/वीर प्रभु
(१५) जुहाडा
(५) दीपक
(६) मोक्ष
(७) विनाश करनेवाला
(८) स्वरूप
(९) अभ्रक
(१०) चार
(११) साधुओं को
(१२) हरताल
(१३) नवतत्त्व
(१४) संक्षिप्त
(१५) सुरमा
(१६) बयालिस
(१७) तेउकाय
(१८) ओले का
(१९) त्रस
(२०) निर्जरा

**प्रश्न-३ शब्दार्थ**

(१) चैतन्य
(२) लोक में
(३) वनस्पतिकाय
(४) अज्ञानी

**प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | ७ | (६) | २ |
| (२) | ८ | (७) | ९ |
| (३) | १ | (८) | ४ |
| (४) | ६ | (९) | ५ |
| (५) | १० | (१०) | ३ |

**प्रश्न-५ संख्या में जवाब**

(१) ८२
(२) ४०
(३) १६
(४) ६४
(५) ६
(६) ८
(७) ५२५
(८) २
(९) १२८
(१०) ६

| | प्रश्न-६ ✓ या × | | प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर |
|---|---|---|---|
| (१) | ✓ | (१) | १० |
| (२) | × | (२) | १७ |
| (३) | ✓ | (३) | २३ |
| (४) | × | (४) | १८ |
| (५) | × | (५) | ११ |
| (६) | × | (६) | ५ |
| (७) | ✓ | (७) | १३ |
| (८) | ✓ | (८) | १९ |
| (९) | × | (९) | २१ |
| (१०) | × | (१०) | १५ |

| प्रश्न-१ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | = | कुल गुण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | |

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. कर्मक्षयजातिशय:- सुर्य से बारह गुना ज्यादा तेजवाला भामंडल प्रभु के पिछे मस्तक के पास होता है। ५ से १५ तक ११ अतिशय केवलज्ञान होता है इससे इन्हे कर्मक्षयजातिशय कहते है! ६ से १२ तक ७ रोगादि उपद्रव भगवान के विहार के समय २५-२५ योजन तक नहीं होते।

भोजन का दृष्टांत:-

२. एक चक्रवर्ती था छः खंडो का अधिपति एक भिक्षुक के पुण्य के कारण उसे चक्रवर्ती ने कहा मे आज तुझपर बहुत प्रसन्न हुं। मांग जो मांगना है! भिक्षुक भुखा था उसने चक्रवर्ती से कहा मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए बस हररोज पेट भर खाना मिल जाए चक्रवर्ती ने बात स्वीकार कर ली और नगर मे भी सभी को इस बात की सूचना दी गई शुरुआत चक्रवर्ती ने अपने राजप्रसाद से कराई और अन्य जगह भोजन करने मे उसे वह स्वाद नहीं मिला! अगर वह हमेशा खाने की इच्छा न करता तो उसे विशेष प्रसंग पर चक्रवर्ती के यँहा भोजन मिल जाता है लेकिन अब वह जब तक छः खंडो के लोगो के यंहा भोजन नहीं करेगा तब तक उसे ऐसा सौभाग्य नहीं मिलेगा।

३. प्रभु ऋषभदेव की राज्य व्यवस्था:- प्रभु अपनी राज्य व्यवस्था के लिए उग्र, भोग, राजन्य और क्षत्रिय कुलो की स्थापना की। कल्पवृक्ष के विच्छेद से लोग कंदमूल आदि खाने लगे इसे रोकने के लिए प्रभुने अपना आचार जानकर असि-मसि कृषि की व्यवस्था की पांच प्रकार के शिल्प का ज्ञान दिया। इस समय अग्नि प्रकट हुई। प्रभु ने अन्न पकाने की कला सिखाई। भरत और बाहुबली को पुरुषो की ७२ कलाए और ब्राह्मी और सुंदरी को स्त्रियों की ६४ कलाए भी सिखाई ब्राह्मी को अठारह लिपीयाँ और सुंदरी को गणित सिखाया

४. महामंत्र नवकार:- इस महामंत्र मे पंच परमेष्ठि को नमस्कार किया गया है। इसका दुसरा नाम पंचमंगलसुत्र व पंच परमेष्ठीस्तव भी कहा जाता है। इसे नवपद की वजह से इसे नवकार भी कहा जाता है! नवकार मंत्र का एक अक्षर सात सागरोपम के पाप को, एक पद पचास सागरोपम के पाप को तथा पूर्ण नवकार पांच सो सागरोपम का नाश करता है! परम उच्च स्थान पर जो रहे वो परमेष्ठी कहलाते है! इस सुत्र मे अरिहंत और सिद्ध को देवस्वरुप, और आचार्य, उपाध्याय और साधु को गुरुस्वरुप नमस्कार किया जाता है!

५. अरिहंत परमात्मा के उपदेश का सार है नवतत्व - अरिहंत परमात्मा अपनी देशना मे नव तत्व मे से कोई न कोई तत्व पर देशना देते है। इस नवतत्व को जानकर श्रद्धा आ गई बेडा पार है। नवतत्व पर श्रद्धा ही सम्यग दर्शन व मोक्ष मार्ग की नींव है।

जीव- अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर-निर्जरा, बंध और मोक्ष ये नवतत्व है!